भालू की परछाई

जोन हयात हार्लो

चित्र: जिम अर्नोस्की

भालू की परछाई

जोन हयात हार्लो
चित्र: जिम अर्नोस्की

For Jus [redacted]

जॉर्ज जहाँ रहता था, वहाँ सर्दियों में रातें बड़ी लंबी होती थीं. इतनी लंबी कि कभी-कभी दिन में भी सूरज बिल्कुल नहीं चमकता था. जब जॉर्ज सुबह उठता तो बाहर तभी भी अंधेरा होता था, और जब वह नाश्ता करता, तो उसे तारे अभी भी चमकते हुए दिखाई देते थे. जब जॉर्ज के पिता सुबह के अंधेरे में काम पर जाते, तो जॉर्ज और उसकी माँ एक चमकदार खिड़की से उनसे अलविदा कहते थे. जॉर्ज का भाई गाँव में स्कूल जाते समय लालटेन लेकर जाता था. किसी दिन, जब जॉर्ज बड़ा होगा, तो वह भी ठंडी, काली सुबह में पैदल स्कूल जाएगा.

जॉर्ज जहाँ रहता था, वहाँ भालू भी रहते थे—बड़े-बड़े ध्रुवीय भालू (पोलर बेयर) जो चुपचाप बर्फ पर चलते और किसी परछाई की तरह चुपचाप गायब हो जाते थे. सर्दियों की लंबी रातों में, उसके पिता एक पुरानी अतीत की कहानियाँ सुनाते थे - जब महान शिकारी, सील और भालुओं का पीछा करते थे और बर्फ से बने घरों में रहते थे, जिन्हें इग्लू कहा जाता था.

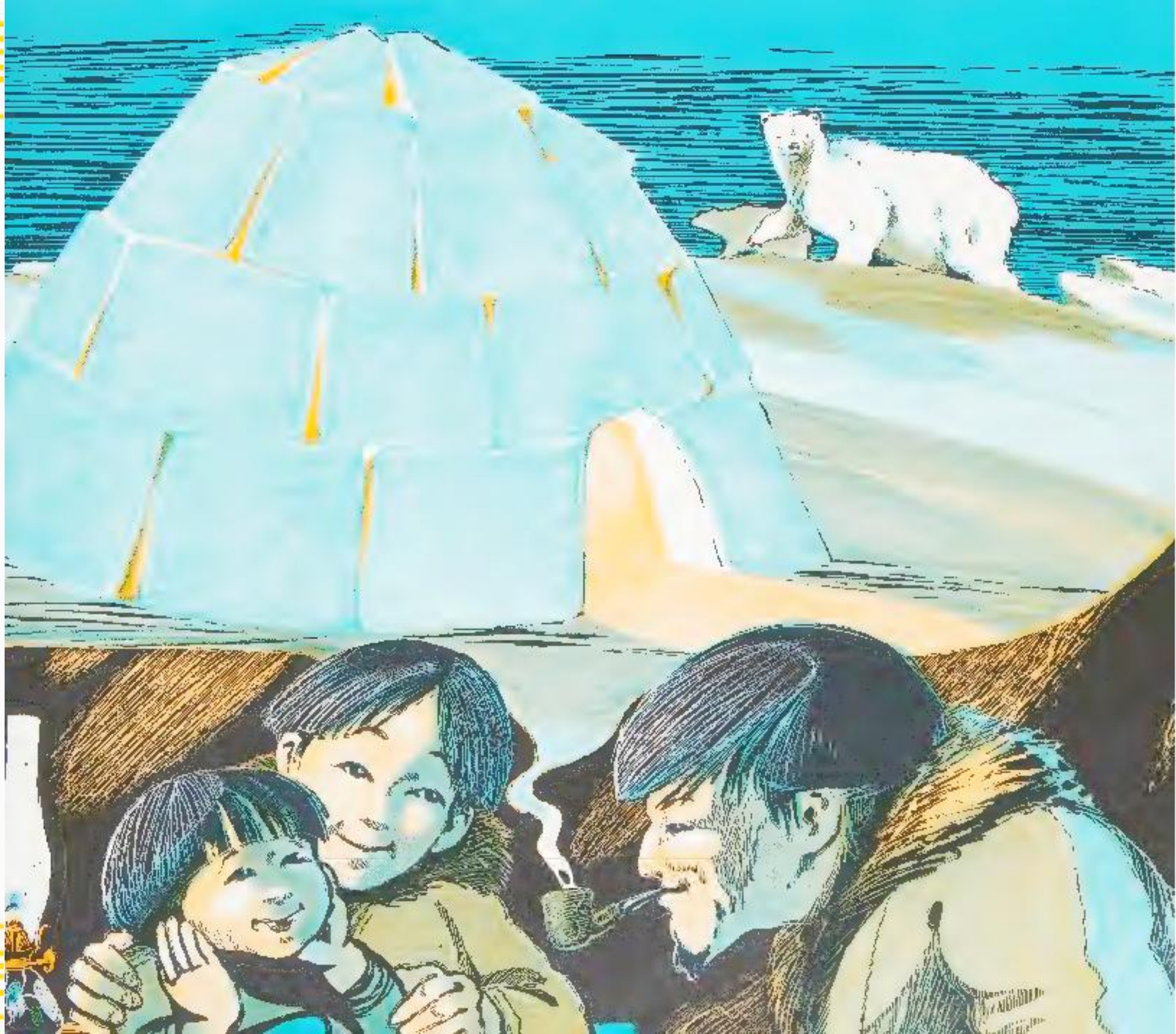

जॉर्ज के पिता ने एक विशाल सफेद ध्रुवीय भालू की कहानी सुनाई जो समुद्र के पास कहीं रहता था. बहुत कम शिकारियों ने ही इस भालू को देखा था, और जिन्होंने उसे देखा था, वे इतने डर गए थे कि वे मुड़कर तुरंत भाग गए थे. जॉर्ज के पिता ने बताया कि उन्होंने बचपन में इस भालू को देखा था, और वह भालू पाँच आदमियों जितना लंबा था! जॉर्ज को उस ध्रुवीय भालू की कहानी सुनना बहुत पसंद थी. उसे उम्मीद थी कि एक दिन वह एक महान शिकारी बनेगा और उस विशाल भालू को ढूंढ निकालेगा.

तारक एक छोटा ध्रुवीय भालू था जो अपनी माँ के साथ समुद्र के पास एक बर्फ की मांद में रहता था. वह सर्दियों में ज़्यादातर समय सोता रहता था. लंबी रातों में गर्म और सुरक्षित रहने के लिए वो अपनी माँ के साथ लिपटा रहता था. तारक को ऐसा लगता था कि वहां हमेशा रात ही होती थी. वह सर्दियों में जल्दी पैदा हुआ था, और वो कभी भी अपनी बर्फ की मांद के बाहर नहीं गया था.

लेकिन उसकी माँ ने उसे बताया कि जल्द ही बसंत ऋतु आएगी और फिर धूप खिलेगी. फिर तारक बाहर जाकर खेल सकेगा. तारक की माँ उसे धनुष-बाण वाले एक शिकारी की कहानी सुनाया करती थीं. वह महान शिकारी, पाँच ध्रुवीय भालुओं जितना लंबा था! तारक बार-बार माँ से वही कहानी सुनाने को कहता था. जब वह सोने जाता, तो तारक सपना देखता कि एक दिन वह उस शिकारी को ढूँढ़ लेगा और वो हमेशा के लिए उसे डराकर भगा देगा.

फिर बसंत आई! जॉर्ज बहुत खुश हुआ जब उसकी माँ ने उसे बताया कि अब इतनी रोशनी हो गई है कि वह बाहर अकेले खेल सकता था! उसने अपनी गर्म पैंट, अपना पार्का, और अपने दस्ताने और मुकलुक पहन लिए, क्योंकि बाहर अभी भी ठंड थी और ज़मीन सफ़ेद थी, हालाँकि धूप खिली हुई थी.

जॉर्ज बाहर गया. बर्फ पर सूरज की रोशनी तेज़ थी और उसके चारों ओर परछाइयाँ बन रही थीं. जॉर्ज के घर की परछाई लंबी, टेढ़ी-मेढ़ी और पतली थी.

माँ ने रस्सी पर जो कपड़े टांगे थे, जिनकी परछाइयाँ बड़ी-बड़ी जमी हुई कागज़ की गुड़ियों जैसी दिख रही थीं. लेकिन जॉर्ज को अपनी परछाईं सबसे अच्छी लगी, क्योंकि उस परछाईं में वो बहुत लंबा दिख रहा था. पिता भी जॉर्ज की परछाईं जितने लंबे नहीं थे. जॉर्ज के पास एक खिलौना धनुष-बाण था, और जब सूरज की रोशनी उसके पीछे होती, तो जॉर्ज की परछाईं किसी शक्तिशाली शिकारी जैसी लगती थी.

छोटा ध्रुवीय भालू, तारक, इतना उत्साहित था, मानो वह पहली बार बाहर खेलने जा रहा हो. वह मांद के द्वार पर खड़ा होकर खूबसूरत दुनिया को देख रहा था. आसमान गहरा नीला था. समुद्र भी नीला था, और बर्फ इतनी सफेद थी कि तारक पलकें झपका रहा था. तारक ने अपनी माँ को ढूँढ़ा, लेकिन वह उसे नहीं मिली. वह ज़ोर से रोया, क्योंकि माँ उसके पास थी. "तुम मुझे नहीं देख सकते, क्योंकि मैं बर्फ की तरह सफेद हूँ," माँ ने समझाया. "तुम भी बर्फ की तरह सफेद हो, और अब तुम सुरक्षित रूप से दौड़ और खेल सकते हो, क्योंकि कोई भी शिकारी तुम्हें तुम्हारे साफ सफेद फर के साथ नहीं देख पाएगा."

तारक ने ऐसा दिखावा किया कि वह मछली पकड़ने जा रहा एक बड़ा भालू था. वह बर्फ़ के एक गड्ढे के पास गया और उसने पानी में नीचे झाँका, अपना पंजा पानी में डाला और उसकी ठंडी नमी महसूस की, लेकिन उसे वहां उसे कोई मछली नहीं मिली. फिर तारक दौड़ा और खेला, और उसके खुरदुरे पंजों ने उसे बर्फ़ पर फिसलने से बचाया. वह बर्फ़ में लोटता रहा, और आख़िरकार बर्फ़ के एक टीले के पास आराम करने बैठ गया.

जॉर्ज ने बर्फ़ के टुकड़ों से छोटे-छोटे भालू बनाए. उसने भालुओं पर तीर चलाए, लेकिन तीर हवा में उड़कर बर्फ़ पर गिर गए. फिर उसने एक खरगोश का पीछा किया जब तक कि खरगोश उसकी नज़रों से ओझल नहीं हो गया. जॉर्ज को शिकारी बनने में इतना मज़ा आया कि उसे पता ही नहीं चला कि वह गाँव से कितनी दूर भटक गया था.

वह यह देखने के लिए बर्फ के एक बड़े टीले पर चढ़ गया कि वह घर से कितनी दूर था. बर्फ फिसलन भरी थी, लेकिन उसके मुकलुस ने उसे ऊपर चढ़ने में मदद की.

जॉर्ज ने पीछे मुड़कर देखा, और दूर से उसे अपना घर और बाहर खड़ी अपनी माँ दिखाई दीं. अचानक, बर्फ के ढेर के पास कुछ हिला. जॉर्ज को अपनी आँखों पर यकीन नहीं हुआ! वो एक विशालकाय भालू की परछाई थी. जॉर्ज भालू को नहीं देख सका, लेकिन परछाई ने उसे बताया कि वो अब तक का सबसे बड़ा, सबसे ऊँचा, सबसे खूँखार भालू था जिसे उसने कभी देखा या जिसके बारे में उसने कभी सपना देखा था! जॉर्ज इतना डर गया कि वह ज़ोर से चिल्लाया. फिर वह बर्फ के टीले से नीचे फिसला और जितनी तेज़ी से हो सका घर की ओर भागा. उसने बस एक बार पीछे मुड़कर देखा, और जब उसने पीछे मुड़कर देखा, तो उसने एक विशालकाय भालू की परछाई को भी भागते हुए देखा.

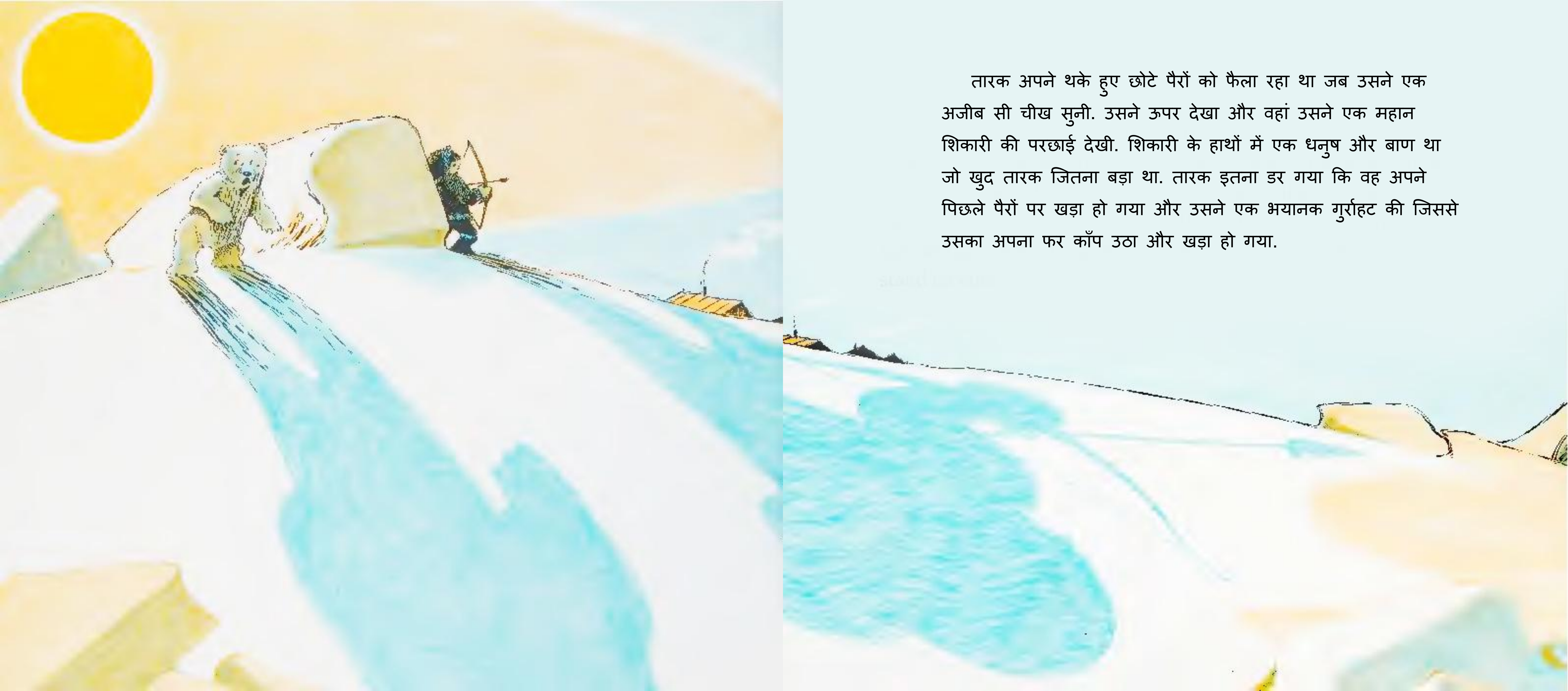

तारक अपने थके हुए छोटे पैरों को फैला रहा था जब उसने एक अजीब सी चीख सुनी. उसने ऊपर देखा और वहां उसने एक महान शिकारी की परछाई देखी. शिकारी के हाथों में एक धनुष और बाण था जो खुद तारक जितना बड़ा था. तारक इतना डर गया कि वह अपने पिछले पैरों पर खड़ा हो गया और उसने एक भयानक गुर्राहट की जिससे उसका अपना फर काँप उठा और खड़ा हो गया.

तारक ने रोने से बचने की कोशिश की, लेकिन उसे अपनी माँ की बहुत याद आई. तभी उसे याद आया कि उसका फर साफ़ और सफ़ेद था और बर्फ़ में उसे कोई नहीं देख सकता था. बहुत धीरे से, छोटा भालू मुड़ा और वो अपनी माँद की ओर जितनी तेजी से हो सका उतनी तेज़ी से भागा. भागते हुए, तारक ने अपने कंधे के ऊपर देखा और शिकारी की परछाईं को भी भागते हुए देखा.

अब, जब रातें लंबी होती हैं, जॉर्ज अपने परिवार के साथ आग के पास बैठता है, और उन्हें उस बसंत के दिन के बारे में बताता है जब उसने, जॉर्ज ने, पाँच आदमियों जितने लंबे विशाल ध्रुवीय भालू को डरा दिया था.

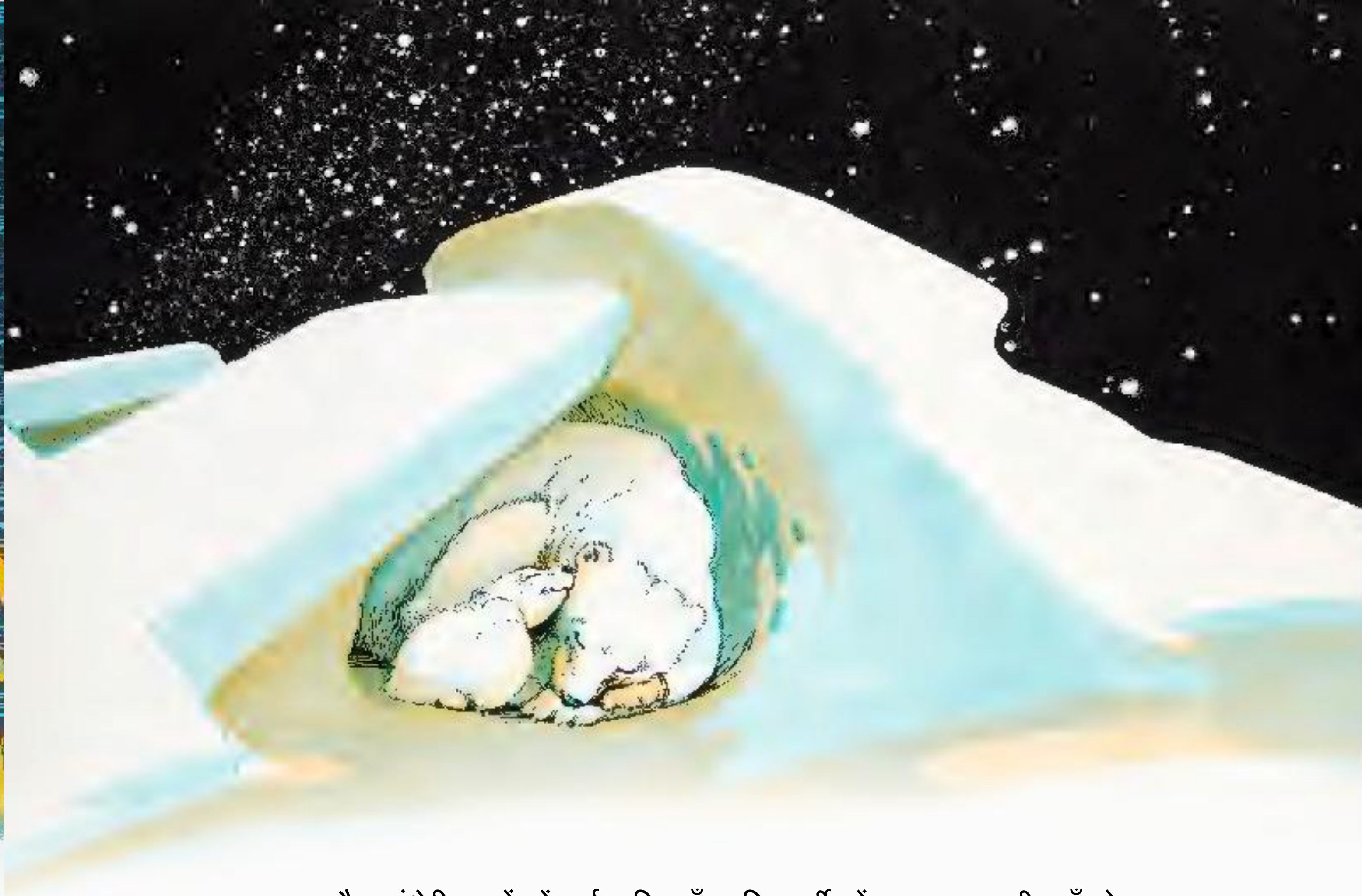

और अंधेरी रातों में, बर्फ़ की माँद की गर्मी में, तारक अपनी माँ से लिपटता है और तब वो उस लंबे शिकारी के सपने देखता है जिसने एक अजीब सी चीख़ मारी थी. और वो सपने देखता है कि कैसे उसने, एक छोटे ध्रुवीय भालू ने, उस विशाल शिकारी को डराकर भगा दिया था.